Knowledgeable Research –Vol.1, No.10, *May 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

अठारहवीं शताब्दी का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत के संदर्भ में

डॉ दीपक सिंह
सहायक आचार्य
स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय, शाहजहांपुर।
Email: visendeepaksingh@gmail.com

****

ABSTRACT

भारतीय इतिहास में अठारहवीं सदी की प्रासंगिकता दो महत्वपूर्ण घटनाक्रमों- मुगल साम्राज्य के पतन और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार से चिह्नित होती है। इन दो घटनाओं ने भारत के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक ढांचे को बदल दिया। विभिन्न इतिहासकारों ने सदी के दो चरणों का अध्ययन किया है और अलग-अलग विषयों पर चर्चा की है। अठारहवीं सदी के भारत पर किए गए अधिकांश अध्ययन उस गिरावट और गिरावट पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो कथित तौर पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों-सामाजिक राजनीतिक धार्मिक या सांस्कृतिक-में व्याप्त थी। यह विचार कि अठारहवीं शताब्दी भारत एक 'अंधकार युग' था, कई यूरोपीय इतिहासकारों जैसे हेनरी बेवरिज जेम्स मिल और जॉन मार्शमैन ने अपने लेखन द्वारा प्रकाश डाला है। इस अवधि के पहले विस्तृत इतिहास लिखने वाले विलियम इरविन और जदुनाथ सरकार ने सम्राटों और उनके अभिजात्य वर्ग के चरित्र में गिरावट को उनकी गलत नीतियों को जिम्मेदार ठहराया। जदुनाथ सरकार के अनुसार औरंगजेब की रूढ़िवादी धार्मिक नीति गैर-इस्लामिक प्रथाओं को हटाना मंदिरों को नष्ट करना हिंदुओं पर भेदभावपूर्ण कर लगाना और दक्कन के लंबे समय तक चलने वाले अभियान मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार थे। जैसा कि सरकार ने कानून और व्यवस्था के संदर्भ में इस अवधि के विकास की जांच की, उन्होंने औरंगजेब को कट्टर-अपराधी माना। वह बाद के मुगलों के तहत राजाओं और अमीरों के व्यक्तिगत पतन और प्रशासन के अक्षम कामकाज के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य के पतन की व्याख्या करता है

Keywords: ब्रिटिश साम्राज्य, मुगल साम्राज्य का पतन, अठारहवीं सदी,

****

भारतीय इतिहास में अठारहवीं सदी की प्रासंगिकता दो महत्वपूर्ण घटनाक्रमों– मुगल साम्राज्य के पतन और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार से चिह्नित होती है। इन दो घटनाओं ने भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढांचे को बदल दिया। विभिन्न इतिहासकारों ने सदी के दो चरणों का अध्ययन किया है और अलग–अलग विषयों पर चर्चा की है। अठारहवीं सदी के भारत पर किए गए अधिकांश अध्ययन उस गिरावट और गिरावट पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो कथित तौर पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों–सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक या सांस्कृतिक–में व्याप्त थी। यह विचार कि अठारहवीं शताब्दी भारत एक 'अंधकार युग' था, कई यूरोपीय इतिहासकारों जैसे हेनरी बेवरिज, जेम्स मिल और जॉन मार्शमैन ने अपने लेखन द्वारा प्रकाश डाला है।[1] इस अवधि के पहले विस्तृत इतिहास लिखने वाले

विलियम इरविन और जदुनाथ सरकार ने सम्राटों और उनके अभिजात्य वर्ग के चरित्र में गिरावट को उनकी गलत नीतियों को जिम्मेदार ठहराया।[2] जदुनाथ सरकार के अनुसार, औरंगजेब की रूढ़िवादी धार्मिक नीति, गैर–इस्लामिक प्रथाओं को हटाना, मंदिरों को नष्ट करना, हिंदुओं पर भेदभावपूर्ण कर लगाना और दक्कन के लंबे समय तक चलने वाले अभियान मुगल साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार थे। जैसा कि सरकार ने कानून और व्यवस्था के संदर्भ में इस अवधि के विकास की जांच की, उन्होंने औरंगजेब को कट्टर–अपराधी माना। वह बाद के मुगलों के तहत राजाओं और अमीरों के व्यक्तिगत पतन और प्रशासन के अक्षम कामकाज के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य के पतन की व्याख्या करता है। उन्होंने कहा कि औरंगजेब के उत्तराधिकारी और उनके रईस, उन्होंने सुझाव दिया, उनके पूर्ववर्तियों की छाया मात्र थे और इस प्रकार औरंगजेब की विरासत की बुराइयों को ठीक करने में असमर्थ थे।[3] नेतृत्व की कमी ने साम्राज्य को विभिन्न बाहरी और आंतरिक खतरों के प्रति संवेदनशील बना दिया और परिणामस्वरूप साम्राज्य का पतन हो गया। सतीशचंद्र के अनुसार, सत्रहवीं शताब्दी में एक केंद्रीकृत राज्य के रूप में साम्राज्य की स्थिरता मनसब और जागीर प्रणाली के कुशल संचालन पर निर्भर थी। औरंगजेब के शासनकाल के अंत में व्यवस्था को बनाए रखने में मुगलों की विफलता इतनी स्पष्ट हो गई थी कि अब इसे छिपाया नहीं जा सकता।[4] उनका मानना है कि 1686-89 के बाद दक्खन में मुगल शासन को मजबूत करने के लिए बड़ी संख्या में अमीरों को शाही सेवाओं में एकीकृत करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें नए मनसब एवं जागीर पुरस्कार के रूप में मिले। धीरे–धीरे इन नई नियुक्तियों के कारण जागीर की मांग बढ़ती गई जिसके परिणामस्वरूप खालिसा भूमि कम होती गई। जागीर की कमी ने गुटबाजी और रिश्वतखोरी को बढ़ाया इससे किसानों का उत्पीड़न हुआ। वह पतन को औरंगजेब के दक्कन अभियान का तात्कालिक परिणाम मानता है। एच. बेवरिज और जेम्स मिल के दृष्टिकोण के बाद, के.के. दत्ता का मानना है कि 'संपूर्ण अठारहवीं शताब्दी संक्रमण का काल था जिसमें भारत को तनाव और पीड़ा से गुजरना पड़ा, चारों ओर भ्रम और अराजकता की विजय के साथ, जबरदस्त अव्यवस्था अक्षम प्रशासन, सामाजिक जीवन में ठहराव था जिससे पारंपरिक विशेषताएं जीवित रहने के लिए कठिन संघर्ष कर रही थीं, और उसकी आर्थिक स्थिति में तेजी से गिरावट आ रही थी।[5] रघुवंशी का तर्क है कि मुगल अराजकता के टूटने ने राजनीतिक विघटन और अराजक स्थितियों को जन्म दिया और इसने मनुष्य के रचनात्मक और सहकारी भावनाओं को नष्ट कर दिया।[6] इरफान हबीब की किताब द एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया, मोरलैंड की किताब एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इंडिया में उनका तर्क है कि जागीर का बार–बार हस्तांतरण भूमि में दीर्घकालिक हित के लिए हानिकारक था। इजारा प्रणाली (अनुबंध खेती) भी किसानों की दयनीय स्थिति का मुख्य कारण थी क्योंकि जागीरदार और इजारादार हमेशा जितना संभव हो राजस्व को निचोड़ने की कोशिश करते थे। एम. एन. पियर्सन ने मराठों द्वारा मुगल सेना को दिए गए सैन्य हमले की व्याख्या की, जिसने मुगल

सेना पर दर्दनाक प्रभाव डाला और 'सफलता की आभा' को तोड़ दिया। सैन्य कुलीनता ने साम्राज्य के भविष्य पर अपना आत्मविश्वास और भरोसा खो दिया। दक्कन अभियान और मनसबदारों की वृद्धि ने अराजकता पैदा कर दी। जे. एफ. रिचर्ड्स ने पारंपरिक दृष्टिकोण को खारिज कर दिया कि जागीर की कमी के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। उन्होंने गोलकुंडा के आंकड़ों का हवाला दिया और दावा किया कि शाही शासन को मजबूत करने के लिए मुगलों को नए राजस्व कार्य उपलब्ध थे। औरंगजेब की विफलता नव विजित क्षेत्रों से स्थानीय अभिजात वर्ग का समर्थन हासिल करने में थी, जिसके परिणामस्वरूप दक्कन प्रांतों का अधूरा प्रशासनिक और राजनीतिक एकीकरण हुआ। अतहर अली मुगल साम्राज्य के पतन को सांस्कृतिक विफलता के रूप में मानते हैं जो पूरे इस्लामी जगत में व्याप्त हो गया और जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक संतुलन यूरोप के पक्ष में स्थानांतरित हो गया। अतहर अली के अनुसार, पुरानी सड़ती हुई संस्कृति को नई संस्कृति द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया गया था और इस प्रकार, ब्रिटिश शासन की स्थापना के समय न केवल आर्थिक विनाश हुआ था, बल्कि वास्तविक सांस्कृतिक विनाश भी हुआ था।[7] अलीगढ़ स्कूल का पारंपरिक दृष्टिकोण है जो अवधि के गिरावट और ठहराव को 'अंधकार युग' के रूप में जांचता है।

जबकि संशोधनवादी इतिहासकार इस अवधि को 'आर्थिक समृद्धि' के रूप में देखते हैं। वे उस अवधि के विकासवादी पैटर्न पर जोर देते हैं जो निरंतरता और संप्रभुता के विकेंद्रीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। मुजफ्फर आलम और आंद्रे विंक ने मुगल पतन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में व्यक्त किया जिसमें मुगल सम्राटों के औपचारिक संरक्षण के तहत स्थानीय अभिजात वर्ग ने अधिक संप्रभुता हासिल करना शुरू कर दिया।[8] सी. ए. बाली और आंद्रे विंक जैसे इतिहासकारों ने तर्क दिया था कि नए राज्यों के उद्भव ने विस्तार और विकास की एक पुरानी अवधि की परिपक्वता को प्रतिबिंबित किया जो मुगलों को शामिल नहीं कर सका।[9]

मुगल राज्य के टूटने के बाद बड़ी संख्या में स्वतंत्र और अर्ध–स्वतंत्र छोटे राज्यों का उदय हुआ जो तीन प्रकार के होते थे।

1. मुगलों के खिलाफ विद्रोह के दौरान सिखों, जाटों और मराठों द्वारा स्थापित योद्धा राज्य, जिन्होंने सैन्य राजकोषीयवाद अपनाया था।
2. उत्तराधिकारी राज्य, यानी स्वतंत्र राज्य जहां सूबेदारों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया, उदाहरण– बंगाल और अवध के नवाब और हैदराबाद के निजाम।
3. सघन राज्य, जिनकी संप्रभुता ने 18वीं शताब्दी में अधिक महत्व प्राप्त किया, उदाहरण– राजपूत राज्य, मैसूर आदि, जो सैन्य राजकोषीयवाद के आधार पर विकसित हुए।

नए शोध इन छोटे राजनीतिक गठन की प्रकृति में गहराई तक गए हैं और कई प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है। भूमि के अधिकार को 'प्रीबेंडल' से 'पैट्रिमोनियल' में बदलने के अलावा, नवगठित प्रांतीय राज्यों ने सैन्य राजकोषीयवाद को लागू किया। इसका अर्थ था वित्तीय संसाधन प्राप्त करना, एक सामाजिक आधार खोजना और एक प्रभावशाली स्थायी सेना का निर्माण करना। बर्टन स्टीन और डेविड वॉशब्रुक का दावा है कि सैन्य राजकोषीयवाद में, राज्य वेतनभोगी कर संग्राहकों की नियुक्ति और एक केंद्रीकृत सेना को एक साथ रखने जैसे नए तरीकों से अपने कर आधारों को बढ़ा रहे थे।[10] एक अन्य प्रवृत्ति 'शाही शक्ति का व्यावसायीकरण' थी। इसका शाब्दिक अर्थ था राजनीति में व्यापारियों की भागीदारी। उदाहरण के लिए, बंगाल में, जगतसेठों का बैंकिंग परिवार नवाबों का मुख्य वित्तपोषक बन गया, जो ऋण प्रदान करता था और राजस्व खेती में भाग लेता था। शक्ति के व्यावसायीकरण ने सामाजिक संबंधों को अभिव्यक्त करने के लिए वस्तुगत मौद्रिक मूल्यों के उपयोग को प्रोत्साहित किया। करेन लियोनार्ड का तर्क है कि स्वदेशी बैंकिंग फर्म मुगल राज्य के अपरिहार्य सहयोगी थे और महान रईसों और शाही अधिकारियों के इन फर्मों पर सीधे निर्भर होने की संभावना अधिक थी। जब 1650-1750 की अवधि में इन बैंकिंग फर्मों ने अपने आर्थिक और राजनीतिक समर्थन को नवजात क्षेत्रीय राज्यों और शासकों की ओर पुनर्निर्देशित करना शुरू किया, तो इससे दिवालियापन, राजनीतिक संकटों की आगामी श्रृंखला और 'साम्राज्य का पतन' हुआ।[11]

18वीं शताब्दी के आर्थिक संकेतक बताते हैं कि औपनिवेशिक शासन के आगमन से पहले अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन अच्छा था। जनसंख्या, उत्पादन और व्यापार में वृद्धि के रिकॉर्ड हैं, जिससे अर्थव्यवस्था स्थिर हो रही है। शहरीकरण भी आर्थिक समृद्धि का एक महत्वपूर्ण संकेतक था। अशिन दासगुप्ता का दावा है कि कुछ शहरों की गिरावट की भरपाई दूसरों के विकास से हुई। दिल्ली, आगरा, लाहौर और बुरहानपुर जैसे पुराने मुगल केंद्रों का मुगल राजनीतिक भाग्य के साथ पतन हुआ। सूरत और मसूलीपट्टम जैसे महत्वपूर्ण बंदरगाह शहरों में भी गिरावट आई है। उनका स्थान मद्रास, बंबई और कलकत्ता जैसे शहरों और अंतर्देशीय शहरों और लखनऊ, फैजाबाद, बनारस, हैदराबाद, श्रीरंगपट्टम और बंगलौर जैसे क्षेत्रीय राज्यों की राजधानियों ने ले लिया। मिर्जापुर, कानपुर और बड़ौदा जैसे व्यापारिक शहर भी सेवा व्यापार के लिए अस्तित्व में आए ।[12]

कला, संस्कृति, वास्तुकला, संगीत, चित्रकला, कविता और धार्मिक गतिविधियों के लिए राजधानी और साथ ही प्रांतीय स्तरों पर पतन के रूप में देखा जा सकता है। वस्तुओं और सेवाओं के बाजार के रूप में अपनी प्रधानता खो देने के बावजूद, अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान राजधानी का

व्यापार और वाणिज्य पूरी तरह से बाधित नहीं हुआ था। दिल्ली से जुड़ा लंबी दूरी का व्यापार, हालांकि बहुत कम पैमाने पर, पुराने शाही मार्ग के साथ जारी रहा। इसमें कश्मीर, काबुल और मध्य एशिया के साथ व्यापारिक संबंध शामिल थे।[13] यह सुरक्षित रूप से तर्क दिया जा सकता है कि शाही पतन का मतलब सांस्कृतिक विकास में गिरावट नहीं था। मुगल चित्रकला शैली जो देश के विभिन्न भागों में फैली हुई थी, फलती–फूलती रही। संगीत ने भी उत्तर में 'ख्याल' और दक्षिण में कर्नाटक संगीत के क्षेत्र में एक उछाल को प्रतिबिंबित किया। अन्य के साथ–साथ लखनऊ और हैदराबाद में यूरोपीय विशेषताओं का प्रयोग करते हुए स्थापत्य शैली में प्रयोग भी हुए। भक्ति और सूफी आंदोलनों सहित धार्मिक शिक्षा की परंपरा को मराठों के साथ–साथ नए उभरते मुस्लिम क्षेत्रीय राज्यों से प्रोत्साहन मिला।[14] व्यक्तिगत स्तर पर भी हम विभिन्न क्षेत्रों में स्थायी योगदान देख सकते हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं जयसिंह की विरासत, खगोल विज्ञान में अंबर के महाराजा, इस्लामिक धर्म और दर्शन में शाह वलीउल्लाह देहलवी, उर्दू शायरी में मीर तकी मीर, मिर्जा रफी सौदा, ख्वाजा मीर दर्द और मीर हसन।

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अठारहवीं शताब्दी के भारत को राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक रूप से पूर्ण पतन की अवधि के रूप में नहीं देखा जा सकता है। यह एक घटनापूर्ण अवधि थी और पाश्चात्य लोगों द्वारा सभ्यता के 'उपहार' से पहले, दो साम्राज्यों या 'अंधकार युग' के बीच की खाई नहीं थी। यह परिवर्तन द्वारा चिह्नित अवधि थी और नई क्षेत्रीय राजनीति उभरी। कंपनी राज द्वारा स्वदेशी आर्थिक और सांस्कृतिक तत्वों को चूसा गया। धर्म, संस्कृति, साहित्य, संगीत आदि के क्षेत्रों में बड़े विकास हुए। यह जीवंत व्यावसायिकता थी, जिसने भारत को यूरोपीय कंपनियों के लिए आकर्षक बना दिया। इसलिए, एक स्थिर, अपरिवर्तनशील और पिछड़े समाज का तर्क अठारहवीं शताब्दी के भारत के लिए सही नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कलाम,ताबीर, रिलिजियस ट्रेडिशन एंड कल्चर इन अठारहवीं सेंचुरी नॉर्थ इंडिया, दिल्ली, 2013 P.No-1
2. इरविन,विलियम , लेटर मुगल्स, पुनर्मुद्रण, नई दिल्ली, 1971। जदुनाथ सरकार, मुगल साम्राज्य का पतन, 1 कलकत्ता, 1938 तीसरा संस्करण, कलकत्ता, 1964.
3. आलम,मुजफ्फर , मुगल उत्तर भारत में साम्राज्य का संकट, अवध और पंजाब 1707-1748 दिल्ली, 1986 P.No- 2.
4. चंद्र ए सतीश पार्टीज एंड पॉलिटिक्स एट द मुगल कोर्ट 1707-1740 तीसरा संस्करण नई दिल्ली 1979 P.No- –257-268.
5. दत्ता,के.के. , अठारहवीं शताब्दी में भारत के सामाजिक जीवन और आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण 1707-1813 दूसरा संस्करण, नई दिल्ली, 1978 P.No. –13।
6. रघुवंशी, वी.पी.एस., अठारहवीं शताब्दी में भारतीय समाज, नई दिल्ली, 1969 P.No- 245.

7. अली,अतहर , 'अठारहवीं शताब्दी– एक व्याख्या।' 'द इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू' में, खंड वी। संख्या। 1-21978 P.No- 1985-6.
8. आलम,मुजफ्फर -द क्राइसिस ऑफ एम्पायर, पीपी। 1-17., आंद्रे विंक, भूमि और संप्रभुता भारत में अठारहवीं शताब्दी के तहत मराठा स्वराज्य, अप्रकाशित पीएचडी, थीसिस, लीडेन विश्वविद्यालय, 1984.
9. बेली, सीए , रूलर्स, टाउन्समेन्स एंड बाजार्स, नॉर्थ इंडियन सोसाइटी इन एज ऑफ ब्रिटिश एक्सपेंशन, 1770-1870 कैम्ब्रिज, 1983.
10. वाशब्रूक, डेविड ए, 'दक्षिण एशिया, विश्व व्यवस्था और विश्व पूंजीवाद' 'द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, वॉल्यूम। एक्सएलआईएक्स (3), 1990 P.No- 479-508
11. लियोनार्ड, करेन 'द ग्रेट फर्म' सिद्धांत मुगल साम्राज्य के पतन का, 'समाज और इतिहास में तुलनात्मक अध्ययन' में, वॉल्यूम। 21नंबर 2 अप्रैल 1979, P.No- 161-7
12. गुप्ता, अशीन दास ट्रेड एंड पॉलिटिक्स इन अठारहवीं सेंचुरी इंडिया, मुजफ्फर आलम और संजय सुब्रह्मण्यम में संपादित, 'द मुगल स्टेट 1526-1750', नई दिल्ली, 1998, , P.No- 361,397.
13. फोर्स्टर, जॉर्ज ए. जर्नी फ्रॉम बंगाल टू इंग्लैंड थ्रू द नॉर्थन पार्ट्स ऑफ इंडिया, कश्मीर, अफगानिस्तान एंड पर्शिया, लंदन 1798, P.No-141,191, 218.
14. चंद्र , सतीश, भारत में अठारहवीं शताब्दी– इसकी अर्थव्यवस्था और मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर निबंध में मराठों, सिखों और अफगानों की भूमिका, नई दिल्ली, 2003, P.No-112-113.